# उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

## अध्ययन निर्देशिका

अध्याय सात

# भविष्यवाणियों का उद्देश्य

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

# विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका ..... 3

नोट्स ..... 4

I. परिचय (0:26) ..... 4

II. दैव्य सर्वोच्चता (1:26) ..... 4

A. परमेश्वर का अपरिवर्तित होना (2:46) ..... 4

1. परमेश्वर का चरित्र (3:20) ..... 4

2. वाचायी प्रतिज्ञाएं (3:53) ..... 5

3. अनन्त सम्मति (4:45) ..... 5

B. परमेश्वर का विधान (7:22) ..... 6

III. भविष्यवाणियां और मानवीय संभावनाएं (10:38) ..... 7

A. सामान्य प्रारूप (11:25) ..... 7

1. अवलोकन (11:59) ..... 7

2. स्पष्टीकरण (12:50) ..... 7

3. व्याख्या (13:34) ..... 8

B. विशेष उदाहरण (15:39) ..... 8

1. शमायाह की भविष्यवाणी (16:05) ..... 8

2. योना की भविष्यवाणी (18:33) ..... 9

IV. भविष्यवाणियों की निश्चितता (21:02) ..... 10

A. सशर्त भविष्यवाणियां (23:33) ..... 11

B. अनाधिकृत भविष्यवाणियां (24:35) ..... 11

C. अभिपुष्ट भविष्यवाणियां (26:31) ..... 12

1. शब्द (27:06) ..... 12

2. चिह्न (28:39) ..... 13

D. शपथबद्ध भविष्यवाणियां (30:05) ..... 13

V. भविष्यवाणी के लक्ष्य (34:46) ..... 15

A. प्रचलित दृष्टिकोण (35:07) ..... 15

B. सही दृष्टिकोण (38:48) ..... 15

1. "क्या जाने?" प्रतिक्रिया (39:28) ..... 16

2. द्विरूपीय प्रतिक्रिया (42:30) ..... 17

VI. निष्कर्ष (43:54) ..... 18

पुनर्समीक्षा के प्रश्न ..... 19

उपयोग के प्रश्न ..... 24


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

---

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

# नोट्स

## I. परिचय (0:26)

## II. दैव्य सर्वोच्चता (1:26)

परमेश्वर की सर्वोच्चता की बाइबल की धर्मशिक्षा हमें एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करती है ताकि हम यह भविष्य के बारे में भविष्यवाणियों को समझ सकें।

### A. परमेश्वर का अपरिवर्तित होना (2:46)

परमेश्वर के अपरिवर्तित रहने की धर्मशिक्षा यह है कि परमेश्वर कभी बदलता नहीं है।

#### 1. परमेश्वर का चरित्र (3:20)

परमेश्वर का चरित्र नहीं बदलता। परमेश्वर सदैव प्रेममय है, सदैव न्यायी है, सर्वज्ञानी है, सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापी है।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर की विशेषताएं समय के साथ नहीं बदलतीं।

## 2. वाचायी प्रतिज्ञाएं (3:53)

जब परमेश्वर कोई वाचायी प्रतिज्ञा करता है तो वह सदैव बनी रहती है और कभी नहीं टूटती।

## 3. अनन्त सम्मति (4:45)

परमेश्वर के पास एक अपरिवर्तनीय योजना जो सारे इतिहास को संचालित करती है।

भविष्यवक्ता यह समझ गए थे कि परमेश्वर अपने चरित्र के प्रति सदैव सच्चा रहेगा। वह अपनी वाचायी प्रतिज्ञाओं में दृढ़ रहेगा। सब बातों पर परमेश्वर की सम्मति और उसका नियंत्रण कभी असफल नहीं होगा।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## B. परमेश्वर का विधान (7:22)

विधान : इतिहास में परमेश्वर की सक्रिय भागीदारी जब वह ब्रह्मांड के लिए अपनी अनन्त योजना को क्रियान्वित करता है।

परमेश्वर भिन्न-भिन्न तरीकों से अपनी सृष्टि के साथ कार्य करने के द्वारा अपनी योजना को पूरा करता है। वह कम से कम तीन भिन्न-भिन्न तरीकों में द्वितीयक कारणों या सृष्टिसंबंधी कारणों के साथ कार्य करता है।

- आवश्यक रूप से — वे घटनाएं जो प्रकृति के नियमित नियमों के अनुसार घटती हैं, जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम।

- स्वतंत्र या मुक्त रूप से — वे जो मानवीय दृष्टिकोण से यहां-वहां प्रकट होती है।

- संभावनाओं के संबंध — परमेश्वर मानवीय इच्छा की संभावनाओं के साथ कार्य करने के द्वारा इतिहास की दिशा को नियंत्रित करता है।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## III. भविष्यवाणियां और मानवीय संभावनाएं (10:38)

कभी-कभी परमेश्वर मानवीय इच्छा की संभावनाओं के द्वारा अपनी अनन्त योजना को पूरा करता है।

### A. सामान्य प्रारूप (11:25)

यिर्मयाह 18:1-10

- यिर्मयाह का अवलोकन
- यहोवा का स्पष्टीकरण
- यहोवा की व्याख्या

#### 1. अवलोकन (11:59)

कुम्हार मिट्टी के उस गोले के साथ कार्य करता है, और अपनी सर्वोत्तम कल्पना के अनुसार उसे आकार देता है।

#### 2. स्पष्टीकरण (12:50)

परमेश्वर के पास वह अधिकार सुरक्षित है, वह अपने लोगों के साथ वैसा ही करे जो उसे सर्वोत्तम लगता है।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

### 3. व्याख्या (13:34)

परमेश्वर ने कुम्हार और मिट्टी की इस समरूपता को भविष्यवक्ता की भविष्यवाणियों पर लागू किया।

मानवीय इच्छा की ऐतिहासिक संभावना परमेश्वर द्वारा दण्ड की भविष्यवाणी की पूर्णता में एक बड़ा अंतर ला सकती है।

परमेश्वर मनुष्यों के दण्ड की चेतावनियों और आशीष के प्रस्तावों के प्रति प्रत्युत्तर पर प्रतिक्रिया देने के लिए स्वतंत्र है।

## B. विशेष उदाहरण (15:39)

### 1. शमायाह की भविष्यवाणी (16:05)

भविष्यवाणी : परमेश्वर शीशक के हाथ में कर देगा।।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

भविष्यवक्ताओं की सेवकाइयों से अपरिचित लोगों को ऐसा लगता है जैसे कि शमायाह ने परमेश्वर की अनन्त, अपरिवर्तनीय आज्ञा प्रदान की।

रहूबियाम और यहूदा के अगुवों को आशा थी कि ये शब्द परमेश्वर की ओर से एक चेतावनी मात्र थे — परमेश्वर उनके साथ क्या करेगा यदि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया।

शमायाह ने आने वाले दण्ड की चेतावनी दी :

- इसलिए नहीं कि वह लोगों को अनन्तकाल के नरक में भेज दे
- बल्कि इसलिए कि लोग यह चेतावनी सुनें, पश्चाताप करें और फिर परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करें

## 2. योना की भविष्यवाणी (18:33)

भविष्यवाणी : चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पश्चाताप की हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावना भविष्यवाणी के पूरा होने से पहले घटित हुई।

मानवीय इच्छा की संभावना ने भविष्यवाणियों के पूर्ण होने के तरीकों को प्रभावित किया।

## IV. भविष्यवाणियों की निश्चितता (21:02)

पुराने नियम की भविष्यवाणियों में भिन्नता :

- वाचायी आशीषें और दण्ड

- बड़े और छोटे दण्ड एवं आशीषें

- दण्ड और आशीष को लागू करने की परमेश्वर की दृढ़ता के स्तर


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब भविष्यवक्ता परमेश्वर के विषय में कहता है कि उसमें भविष्यवाणी को पूरा करने के उच्च या निम्न स्तर हैं तो वे उसके बारे में मानवीय रूप में बात कर रहे हैं।

## A. सशर्त भविष्यवाणियां (23:33)

"यदि... तो" के कथनों के रूप में विशेष शर्तें पुराने नियम की भविष्यवाणियों में बहुत बार दिखाई देती हैं।

वह दिशा जो इतिहास लेगा उसका निर्धारण उन विकल्पों पर आधारित होगा जो वे चुनेंगे।

## B. अनाधिकृत भविष्यवाणियां (24:35)

भविष्य के विषय में सामान्य कथन जिनमें कोई विशेष शर्तें नहीं होती।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मानवीय प्रत्युत्तरों के उच्च स्तर घटनाओं को भिन्न दिशाओं में मोड़ सकते हैं।

अनाधिकृत भविष्यवाणियों के रूप में भी वाचायी आशीषें प्रकट होती हैं।

## C. अभिपुष्ट भविष्यवाणियां (26:31)

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं यह दिखाने के द्वारा कि परमेश्वर ने कुछ भविष्यवाणियों की पुष्टि की, उन्होंने परमेश्वर की गहरी दृढ़ता को बताया।

### 1. शब्द (27:06)

भविष्यवक्ताओं ने शब्दों के द्वारा परमेश्वर की गहरी दृढ़ता को दर्शाया।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

### 2. चिह्न (28:39)

भविष्यवाणिय चिन्हों और प्रतीकात्मक कार्यों ने स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर के दृढ़-संकल्प के स्तर बहुत ऊंचे थे।

जब किसी भविष्यवाणी के साथ चिन्ह जुड़े होते थे तो यह दर्शाता था कि भविष्यवक्ता ने जो भविष्यवाणी की है, परमेश्वर उसे पूरा करने के लिए बहुत दृढ़-संकल्पी था।

## D. शपथबद्ध भविष्यवाणियां (30:05)

प्रायः भविष्यवक्ताओं ने घोषणा की कि परमेश्वर ने कुछ करने की शपथ ली है।

जब परमेश्वर भविष्यवाणी में एक शपथ को जोड़ता है, तो वह उस भविष्यवाणी को वाचायी निश्चितता के स्तर तक उठाता है।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

शपथबद्ध भविष्यवाणियों में भी परमेश्वर ऐतिहासिक संभावनाओं में हस्तक्षेप करने की स्वतंत्रता रखता है।

- लोगों की प्रतिक्रियाओं के द्वारा समय को प्रभावित किया जा सकता है।

- भविष्यवाणी का अनुभव कौन करेंगे, यह प्रायः लचीला विषय रहता है।

- भविष्यवाणी किस प्रकार पूरी होगी, उसके विवरणों को प्रायः बताया नहीं जाता।

- किस स्तर तक भविष्यवाणी पूरी होगी, यह भी सदैव एक खुला प्रश्न रहता है।

प्रार्थनाएं और पश्चाताप, विद्रोह और अवज्ञा भविष्यवाणी की पूर्णता में महत्वपूर्ण अंतर पैदा कर सकते थे।

- अमोस 6:8 में दण्ड की शपथ

- यशायाह 62:8 में आशीष की शपथ


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## V. भविष्यवाणी के लक्ष्य (34:46)

### A. प्रचलित दृष्टिकोण (35:07)

"पूर्वानुमान" — पुराने नियम की भविष्यवाणी के उद्देश्य का एक प्रभावी दृष्टिकोण।

अनेक मसीही मानते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने केवल भविष्य ही बताया है; उन्होंने होने वाली घटनाओं को पहले से बताया है।

- व्यवस्थाविवरण 18:20-22

- *गलत धारणा* : यदि यहोवा का एक सच्चा भविष्यवक्ता कुछ कहता है तो ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा उसने कहा था।

- *सही :* केवल यही नहीं पूछना है, "भविष्यवक्ता ने प्रत्यक्ष रूप से क्या कहा था?" बल्कि यह भी, "कौन-कौनसी अप्रत्यक्ष अवस्थाएं लागू होती हैं?"

### B. सही दृष्टिकोण (38:48)

भविष्यवक्ताओं ने मुख्य रूप से अपने श्रोताओं को उत्साहित और सक्रिय करने के लिए भविष्य के बारे में बात की।

- भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को भविष्य के *बारे में* बताने के प्रति उत्सुक नहीं थे।

- वे मुख्य रूप से अपने श्रोताओं को भविष्य को *बनाने* के लिए सक्रिय करना चाहते थे।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## 1. "क्या जाने?" प्रतिक्रिया (39:28)

यह "क्या जाने?" प्रतिक्रिया तीन परिस्थितियों में हुई।

2 शमूएल 12:14

- जब नातान ने बेतशिबा के साथ दाऊद के व्यभिचार करने पर उसका सामना किया।
- दाऊद का प्रत्युत्तर : "क्या जाने?"

योना 3:4, 9

- योना ने निनवे नगर से कहा था कि दण्ड आने वाला है।
- निनवे के राजा ने कहा : "क्या जाने?

योएल 2:1-11

- योएल ने घोषणा की कि यरूशलेम के विरूद्ध एक भयानक दण्ड आने वाला है।
- योएल का प्रोत्साहन : "क्या जाने?"


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुराने नियम के विश्वासियों ने सोचा नहीं था भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों में उनके भविष्य बंद थे। इसकी अपेक्षा उन्होंने सदैव यह सोचा था कि भविष्यवाणियों के पूरे होने के तरीकों पर हस्तक्षेप करने वाली ऐतिहासिक संभावनाओं- विशेषकर प्रार्थना की संभावना- का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ना संभव था।

## 2. द्विरूपीय प्रतिक्रिया (42:30)

दण्ड :

- बताए गए दण्ड को सुनिश्चित करने के लिए चेतावनी को नजरअंदाज करें और परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते रहें।

- पश्चाताप और यहोवा में भरोसा ही परमेश्वर के दण्ड को हटाने की एकमात्र आशा है।

आशीषें :

- परमेश्वर के विरूद्ध घोर विद्रोह पूर्व में कही गई आशीषों को हटाकर उसके स्थान पर दण्ड को ले आएगा।

- निरंतर विश्वासयोग्य जीवन प्रतिज्ञा की गई आशीषों को निश्चित रूप से लेकर आएगा।


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों का लक्ष्य प्रमुख रूप से पूर्वानुमान नहीं बल्कि परमेश्वर के लोगों को यहोवा की सेवा में सक्रिय करना था।

## VI. निष्कर्ष (43:54)


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. इसका क्या अर्थ है जब हम कहते हैं कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है?

2. इसका क्या अर्थ है जब हम कहते हैं कि परमेश्वर अपने ईश्वरीय विधान के द्वारा सृष्टि को संचालित करता है?


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. किस प्रकार परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता और उसका विधान परमेश्वर की सर्वोच्चता की सामंजस्यपूर्ण अभिव्यक्तियाँ हैं?

4. भविष्यवाणियाँ किस प्रकार ऐतिहासिक मानवीय संभावनाओं के द्वारा प्रभावित होती हैं?


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. शमायाह और योना के उदाहरण भविष्यवाणियों और ऐतिहासिक मानवीय संभावनाओं के बीच संबंध के बारे में क्या बताते हैं?

6. उन चार नीतियों का वर्णन कीजिए जिनका इस्तेमाल भविष्यवाणियाँ उन्हें पूरा करने के परमेश्वर की दृढता के स्तर को बताने में करती हैं?


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. पुराने नियम की भविष्यवाणियों के उद्देश्य के भ्रांतिपूर्ण प्रचलित दृष्टिकोण कौनसे हैं?

8. “क्या जाने?” प्रतिक्रिया का महत्व क्या है?


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने अपने मूल श्रोताओं में कैसी प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करने की आशा की थी?


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

## उपयोग के प्रश्न

1. परमेश्वर के अपरिवर्तनीय होने के बारे में आपका ज्ञान किस प्रकार मुश्किल समयों में आपको बनाए रख सकता है?

2. यह आपको कैसा महसूस कराता है कि परमेश्वर के प्रति आपके निर्णय और प्रतिक्रियाएं इतिहास की दिशा को प्रभावित करती हैं?

3. यह जानना कि प्रार्थना भविष्यवाणी की पूर्णता के तरीके को बदल सकती है, तो मसीही किन नई प्रकार की प्रार्थनाओं के प्रति उत्साहित हो सकते हैं?

4. किस प्रकार "क्या जाने?" स्वभाव आपके प्रार्थना के जीवन को बदल सकता है?

5. यह अध्ययन दर्शाता है कि भविष्यवक्ता अपने श्रोताओं को भविष्य को बनाने के लिए सक्रिय करना चाहते थे। यह किस प्रकार मसीहियों द्वारा पुराने नियम की पुस्तकों के इस्तेमाल करने के तरीके को प्रभावित करना चाहिए?

6. आपको इस विचार से कैसा अनुभव होता है कि भविष्यवाणी मूलभूत रूप से सशर्त होती है? क्या यह आपको पुनः आश्वस्त करता है? क्या यह आपको डराता है?

7. क्या भविष्यवाणी की सशर्तता आपके किसी विश्वास को चुनौती देती है?

8. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?


© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org